Impact Factor : 7.720

ISSN 2349-364X

वेदाञ्जलि Vedanjali

अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्समीक्षित षाण्मासिकी शोधपत्रिका

(International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

वर्ष- १२ अंक- २४, भाग- ३ जुलाई-दिसम्बर २०२५

प्रधान सम्पादक
डॉ० रामकेश्वर तिवारी

सह सम्पादक
श्री प्रसून मिश्र

प्रकाशन : वैदिक एजूकेशनल रिसर्च सोसाइटी, वाराणसी

वेदांजलि, *An International Peer Reviewed Refereed Research Journal*
वर्ष–12, अंक–24, भाग–3, जुलाई–दिसम्बर 2025। **ISSN: 2349-364X I** ***Impact Factor : 7.720***

डॉ0 राधाकृष्णन की शिक्षा नीति की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ0 ऋतम्भरा श्रीवास्तव
असिस्टेन्ट प्रोफेसर (शिक्षक–शिक्षा विभाग) प्रो0 एच0एन0 मिश्रा कॉलेज ऑफ एजूकेशन, कानपुर (उ0प्र0)

सारांश – डॉ. राधाकृष्णन की शिक्षा नीति का मूल उद्देश्य शिक्षा को नैतिकता, मानवता और संस्कृति के साथ जोड़कर समाज के समग्र विकास की ओर बढ़ाना था। आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में उनकी नीतियों की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है, क्योंकि हम एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते हैं जो तकनीकी रूप से सक्षम होने के साथ–साथ नैतिक और सांस्कृतिक रूप से भी सुदृढ़ हो। डॉ. राधाकृष्णन की शिक्षा नीति को अगर आज प्रभावी रूप से लागू किया जाए, तो यह न केवल छात्रों के व्यक्तित्व का विकास करेगी, बल्कि एक ऐसे समाज की नींव रखेगी जो ज्ञान, नैतिकता, और मानवता के मूल्यों से प्रेरित हो। उनकी शिक्षा नीति का उद्देश्य ष्समग्र विकासष् आज भी शिक्षा के मूलभूत सिद्धांतों में से एक है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की शिक्षा नीति का उद्देश्य केवल ज्ञान का संचार करना नहीं था, बल्कि नैतिकता, मानवता और संस्कृति को शिक्षा से जोड़कर एक ऐसा समाज निर्मित करना था, जो संतुलित और समृद्ध हो। उनका मानना था कि शिक्षा केवल आत्मनिर्भरता का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज के हर व्यक्ति को जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनाने का साधन भी है। आज के युग में जब शिक्षा का स्वरूप लगातार बदल रहा है और तकनीकी प्रगति तेजी से हो रही है, डॉ. राधाकृष्णन के विचार और भी प्रासंगिक हो गए हैं। उनकी नीति में शिक्षा को न केवल रोजगारोन्मुखी बनाने पर बल दिया गया, बल्कि इसे ऐसा साधन बनाने पर जोर दिया गया जो मनुष्य को उसके सामाजिक और सांस्कृतिक दायित्वों का भी बोध कराए।

महत्वपूर्ण शब्द :– डॉ. राधाकृष्णन, शिक्षा नीति, वर्तमान आधुनिक शिक्षा

प्रस्तावना :– किसी भी व्यक्ति एवं राष्ट्र के विकास के लिए उच्चतर चरित्र का होना अनिवार्य है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारतीय शिक्षा प्रणाली के प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाते हैं। उनकी शिक्षा नीति न केवल उनके समय में प्रासंगिक थी, बल्कि आज भी आधुनिक शिक्षा प्रणाली में उनकी विचारधारा की गूंज सुनाई देती है। उनकी शिक्षा नीति का मूल उद्देश्य शिक्षा को नैतिक, सांस्कृतिक, और मानवीय मूल्यों से जोड़ना था। उन्होंने नैतिक ,वैदिक एवम चरित्र निर्माण की शिक्षा पर जोर दिया था. वे ऐसी शिक्षा नीति चाहते थे जिससे की चरित्र निर्माण हो सके. वे कहते थे की सत्य का दर्शन आत्मज्ञान से प्राप्त किया जा सकता है. वे विज्ञान तर्क परंपरा सभी से ऊपर आत्मज्ञान की आत्मिक शक्ति को स्थान देते थे. उनके युग में संसार की जो सामाजिक परिस्थितियां थी. उसके बारे में वे कहते थे कि भारत सहित सारे संसार के कष्टों का कारण यह है कि शिक्षा का संबंध नैतिक, चारित्रिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति से न रहकर केवल मस्तिष्क के विकास से रह गया है. जबकी चरित्र ही भाग्य एवम राष्ट्र का निर्माता है.

किसी भी व्यक्ति एवं राष्ट्र के विकास के लिए उच्चतर चरित्र का होना अनिवार्य है,. यदि चरित्र का पतन होता है, तो व्यक्ति एवं राष्ट्र का पतन हो जाता है. उनका कहना था कि समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने के लिए आदि काल की तरह वर्तमान में भी गुरु शिष्य परंपरा अनुसार शिक्षा पद्धति को विकसित करना चाहिए एवम गुरु शिष्य के बीच आदर भाव को विकसित करना चाहिए. वे शिक्षकों से आग्रह करते हुए कहते थे कि शिक्षकों को छात्रों के साथ मित्रवत व्यवहार रखते हुए उनका मार्गदर्शक बनना चाहिए. शिक्षको को छात्रों को नैतिक शिक्षा, सत्संग, ज्ञानवर्धक पुस्तक का अध्ययन करने हेतु प्रेरित करना चाहिए।

10 + 2 + 3 नीति उन्हीं की देन है. जिसे 1968 एवं 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने इसको देश में लागू किया. उन्होंने शिक्षण संस्थानों को राष्ट्र का निर्माता कहा. आज हमारे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जो अंधकार और निराशा व्याप्त है. उसे शिक्षण संस्थानों एवम शिक्षक ही दूर कर सकते हैं।

डॉ. राधाकृष्णन ने शिक्षक एवम शिष्य के रिश्ते को परिभाषित करते हुए कहा कि शिक्षक राष्ट्र के भावी नागरिकों का निर्माणकर्ता हैं.वे कहते हैं कि "जिस व्यक्ति की आत्मा से दूसरे व्यक्ति की आत्मा में शक्ति का संचार होता है, वह गुरु कहलाता है और जिसके आत्मा में शक्ति संचारित होती है,उसे शिष्य कहते हैं." वे यह भी कहते थे कि बिना नारी शिक्षा के राष्ट्र का निर्माण अधूरा हैं''।

भारतीय संस्कृति के रूप में डॉ.राधाकृष्णन – डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने यह जान लिया था कि जीवन छोटा है और इसमें व्याप्त खुशियाँ अनिश्चित हैं। इस कारण व्यक्ति को सुख–दुख में समभाव से रहना चाहिए। वस्तुतः मृत्यु एक अटल सच्चाई है, जो कि अमीर–गरीब सभी को अपना ग्रास बनाती है तथा किसी भी प्रकार का वर्ग–विभेद नहीं करती है। सच्चा ज्ञान वही है जो आपके अन्दर के अज्ञान को समाप्त कर सकता है। सादगीपूर्ण संतोषवृत्ति का जीवन अमीरों के अहंकारी जीवन से बेहतर है, जिनमें असंतोष का निवास है। एक शांत मस्तिष्क बेहतर है, तालियों की उन गड़गड़ाहटों से जो संसदों एवं दरबारों में सुनाई देती हैं। इस कारण डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्यों को समझ पाने में सफल रहे, क्योंकि वह मिशनरियों द्वारा की गई आलोचनाओं के सत्य को स्वयं परखना चाहते थे। इसीलिए कहा गया है कि आलोचनाएँ परिशुद्धि का कार्य करती हैं। सभी माताएँ अपने बच्चों में उच्च संस्कार देखना चाहती हैं। इस कारण वे बच्चों को ईश्वर पर विश्वास रखने, पाप से दूर रहने एवं मुसीबत में फंसे लोगों की मदद करने का पाठ पढ़ाती हैं। डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने यह भी जाना कि भारतीय संस्कृति में सभी धर्मों का आदर करना सिखाया गया है और सभी धर्मों के लिए

समता का भाव भी हिन्दू संस्कृति की विशिष्ट पहचान है। इस प्रकार उन्होंने भारतीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान को समझा और उसके काफी नजदीक हो गए।

राधाकृष्णन आयोग (1948–49) – वर्ष 1948 में गठित 'राधाकृष्णन आयोग' ने उच्च शिक्षा के संदर्भ में विस्तार से अध्ययन कर अनेक सुझाव दिए। आयोग ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों के वेतनक्रमों में सुधार, ग्रामीण विश्वविद्यालयों की स्थापना, शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषायें रखना, परीक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार, स्नातक पाठ्यक्रम की अवधि तीन वर्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना आदि प्रमुख सुझाव दिया। इन्हीं सुझावों के आधार पर 1953 में 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग' की स्थापना की गई।

सर्वपल्ली राधाकृष्णन का शिक्षा में योगदान – डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अपना अधिकतम जीवन एक शिक्षक के रूप में बिताया, और इस कारण उनके लिए शिक्षा का महत्व काफी अधिक है। शिक्षक समाज को सही मार्गदर्शन करने के लिए कितने अहम है, यह बात वे भली–भाँति जानते थे इसलिए वे खुद भी शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान देना चाहते थे। उन्होंने दर्शन और संस्कृति पर अनेक ग्रन्थों की रचना भी की है। उनकी प्रथम पुस्तक का नाम था– 'द फिलॉसोफी ऑफ रवीन्द्रनाथ टैगोर'। उसके बाद उन्होंने और भी कई पुस्तकें लिखी हैं जिनमें 'द फिलॉसफी ऑफ द उपनिषद्स', 'भगवद्गीता', 'ईस्ट एण्ड वेस्ट–सम रिफ्लेक्शंस', 'ईस्टर्न रिलीजन एण्ड वेस्टर्न थॉट', 'इण्डियन फिलॉसफी', 'एन आइडियलिस्ट व्यू ऑफ लाइफ', 'हिन्दू व्यू ऑफ लाइफ' आदि प्रमुख हैं। शिक्षा एवं साहित्य के प्रति गहरी रुचि एवं उल्लेखनीय योगदान के लिए भारत सरकार ने वर्ष 1954 में उन्हें भारत के सर्वोच्च अलंकरण 'भारत रत्न' से सम्मानित किया। उनकी उपलब्धियों को देखते हुए भारत तथा विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों ने डॉ. राधाकृष्णन को मानद उपाधियाँ प्रदान कीं। दुनियाभर के प्रमुख विश्वविद्यालयों ने उन्हें डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया। इनमें हॉवर्ड विश्वविद्यालय तथा ओवर्लिन कॉलेज द्वारा प्रदत्त 'डॉक्टर ऑफ लॉ' की उपाधियाँ प्रमुख हैं।

डॉ. राधाकृष्णन भाषण कला में इतने निपुण थे कि उन्हें विभिन्न देशों में भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन पर भाषण देने के लिए बुलाया जाता था। उनमें विचारों, कल्पना तथा भाषा द्वारा लोगों को प्रभावित करने की ऐसी अद्भुत शक्ति थी कि उनके भाषणों से लोग मन्त्रमुग्ध रह जाते थे। उनके भाषणों की यह विशेषता दर्शन एवं अध्यात्म पर उनकी अच्छी पकड़ के साथ–साथ उनकी आध्यात्मिक शक्ति के कारण भी थी। उनके राष्ट्रपतित्व काल के दौरान वर्ष 1962 में भारत–चीन युद्ध तथा वर्ष 1965 में भारत–पाक युद्ध लड़ा गया था। इस दौरान उन्होंने अपने ओजस्वी भाषणों से भारतीय सैनिकों के मनोबल को ऊँचा उठाने में अपनी सराहनीय भूमिका अदा की। और शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने काफी योगदान तो दिया ही है।

डॉ. राधाकृष्णन का शिक्षा दर्शन :– डॉ. राधाकृष्णन ने शिक्षा को केवल रोजगार पाने का साधन नहीं माना, बल्कि इसे व्यक्तित्व के समग्र विकास का माध्यम माना। उनका मानना था कि शिक्षा व्यक्ति के भीतर नैतिकता, ईमानदारी और सत्य के प्रति आग्रह को प्रोत्साहित करती है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के कुछ प्रसिद्ध विचार ये हैं – 1. दर्शनशास्त्र एक रचनात्मक विद्या है। **2.** प्रत्येक व्यक्ति ही ईश्वर की प्रतिमा है। **3.** अन्तरात्मा का ज्ञान कभी नष्ट नहीं होता है। **4.** दर्शन का उद्देश्य जीवन की व्याख्या करना नहीं, बल्कि जीवन को बदलना है। **5.** एक शताब्दी का दर्शन ही दूसरी शताब्दी का सामान्य ज्ञान होता है।

वे एक महान् शिक्षाविद् भी थे और शिक्षक होने का उन्हें गर्व था। यही कारण है कि उनके जन्मदिन 5 सितम्बर को 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जाता है। भारत सरकार ने शिक्षा जगत में सुधार लाने के लिए उनकी अध्यक्षता में राधाकृष्णन आयोग का गठन किया। इस आयोग ने शिक्षा प्रणाली में आमूल–चूल परिवर्तन लाने के लिए अनेक सुझाव दिए, और हर वर्ष डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस को उनके जैसे ही लाखों शिक्षकों के योगदान के सम्मान में हम सभी शिक्षक दिवस के रूप में मनाते हैं। उनके शिक्षा दर्शन के प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं–

1. 'मानवता और नैतिकता का विकास' – डॉ. राधाकृष्णन ने शिक्षा को नैतिकता और मानवता के विकास का साधन माना। उनका विचार था कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों को विकसित करना होना चाहिए।

2. 'शिक्षा और संस्कृति का संबंध' :– डॉ. राधाकृष्णन का मानना था कि शिक्षा को अपनी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर से जोड़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारी शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य भारतीय संस्कृति और सभ्यता को समझना और उसे आगे बढ़ाना होना चाहिए।

3. 'शिक्षा में शिक्षक की भूमिका':– डॉ. राधाकृष्णन ने शिक्षक को समाज का पथप्रदर्शक माना। उन्होंने कहा कि एक शिक्षक का काम केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि अपने छात्रों के चरित्र और नैतिकता का निर्माण करना भी है।

4. 'सामाजिक और आर्थिक समानता':– डॉ. राधाकृष्णन ने शिक्षा के माध्यम से समाज में समानता लाने पर बल दिया। उनका मानना था कि शिक्षा समाज के हर वर्ग तक पहुँचनी चाहिए, ताकि सभी को समान अवसर मिल सके।

5. 'शिक्षा में आलोचनात्मक सोच का विकास' – डॉ. राधाकृष्णन ने शिक्षा में छात्रों के भीतर आलोचनात्मक और तार्किक सोच के विकास पर जोर दिया, ताकि वे अपने विचार स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर सकें और समाज की समस्याओं का समाधान खोज सकें।

डॉ. राधाकृष्णन की शिक्षा नीति और आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता – आज के वैश्विक और तकनीकी युग में, उनकी शिक्षा नीति पहले से भी अधिक प्रासंगिक हो गई है।

1. नैतिक शिक्षा और मूल्यों की आवश्यकता :– आज की शिक्षा प्रणाली में ज्ञान और कौशल तो सिखाए जा रहे हैं, लेकिन नैतिकता और मानवता का अभाव देखने को मिलता है। वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों को शामिल करना अनिवार्य है। राधाकृष्णन का विचार था कि शिक्षा का अंतिम उद्देश्य एक नैतिक और जिम्मेदार नागरिक बनाना होना चाहिए। आज के समाज में बढ़ती हिंसा, भ्रष्टाचार और असमानता के समय में उनकी शिक्षा नीति छात्रों में नैतिकता और जिम्मेदारी की भावना को प्रोत्साहित कर सकती है।

2. शिक्षा और सांस्कृतिक पहचान :– वैश्वीकरण के प्रभाव में भारतीय युवा अपनी संस्कृति और परंपराओं से दूर हो रहे हैं। राधाकृष्णन के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य अपनी सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करना है। आधुनिक शिक्षा में भारतीय इतिहास, साहित्य, और दर्शन को प्राथमिकता देकर उनकी नीति को लागू किया जा सकता है।

3. शिक्षा में समावेशिता और समानता – आज भी समाज में कई वर्ग शिक्षा से वंचित हैं। राधाकृष्णन ने शिक्षा के सार्वभौमिक अधिकार की बात की थी। सरकार की ''नई शिक्षा नीति 2020'' में इस दिशा में कदम उठाए गए हैं, लेकिन इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए उनकी नीतियों को लागू करना आवश्यक है।

4. शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका – डॉ. राधाकृष्णन ने कहा था, ''शिक्षक वह नहीं है जो केवल पढ़ाता है, बल्कि वह है जो छात्रों को जीवन जीने का सही मार्ग दिखाता है।'' आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षकों की भूमिका को और अधिक सशक्त बनाना उनकी शिक्षा नीति का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। शिक्षकों को उनके योगदान के लिए सम्मान और प्रोत्साहन देना उनकी नीति का हिस्सा था, जो आज भी प्रासंगिक है।

5. आलोचनात्मक और तार्किक सोच– वर्तमान समय में, शिक्षा प्रणाली में केवल रट्टा–मार पढ़ाई पर ध्यान दिया जाता है, जबकि राधाकृष्णन ने आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच को प्राथमिकता दी थी। आज के छात्र सूचना तो पा रहे हैं, लेकिन उसका उपयोग कैसे करना है, यह सीखने की आवश्यकता है। उनकी नीति का पालन करके छात्रों में नवाचार और समस्या–समाधान की क्षमता को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में डॉ. राधाकृष्णन की शिक्षा नीति का कार्यान्वयन

1. 'नैतिक और मूलभूत शिक्षा पर जोर'– डॉ. राधाकृष्णन का मानना है कि वर्तमान पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को एक अनिवार्य भाग बनाया जाना चाहिए। प्राथमिक शिक्षा से ही नैतिकता, सहिष्णुता, और मानवता जैसे विषयों पर ध्यान दिया जाए।

2. 'संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण'– डॉ. राधाकृष्णन ने शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में सुझाया कि पाठ्यक्रम में भारतीय कला, संस्कृति, और दर्शन को उचित स्थान दिया जाए। छात्रों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर से परिचित कराने के लिए व्यावहारिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।

3. 'शिक्षा में समानता' – डॉ. राधाकृष्णन का मानना है कि शिक्षा को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाने के लिए सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों को मिलकर काम करना चाहिए। डिजिटल शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में शिक्षा पहुँचाई जा सकती है।

4. 'शिक्षक प्रशिक्षण और सम्मान' – डॉ. राधाकृष्णन का मानना है कि शिक्षकों को बेहतर प्रशिक्षण और उचित सम्मान देकर उनकी भूमिका को सशक्त बनाया जा सकता है। शिक्षक दिवस को मनाने का उद्देश्य भी यही है कि समाज शिक्षकों की भूमिका को समझे और उनका आदर करे।

5. 'आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच को प्रोत्साहन' – डॉ. राधाकृष्णन का मानना है कि शिक्षण प्रक्रिया में रटने की बजाय छात्रों को समस्याओं का विश्लेषण और समाधान करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। परियोजना–आधारित शिक्षण और समूह चर्चा जैसे नवाचार अपनाए जाने चाहिए।

डॉ. राधाकृष्णन की वर्तमान आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता :–

1. नैतिकता का निर्माण :– आज की शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। डॉ. राधाकृष्णन की नीति यदि लागू की जाए, तो यह विद्यार्थियों में ईमानदारी, सहिष्णुता और जिम्मेदारी जैसे गुणों को विकसित कर सकती है। नैतिक शिक्षा के बिना, आधुनिक शिक्षा अधूरी मानी जाती है। उनके सिद्धांतों के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य नैतिक और चरित्रवान मनुष्य तैयार करना है।

2. 'सांस्कृतिक पहचान को पुनःस्थापित करना:– वैश्वीकरण के इस दौर में, जहां युवा अपनी सांस्कृतिक पहचान खो रहे हैं, उनकी शिक्षा नीति भारतीय परंपराओं, साहित्य और कला को पाठ्यक्रम में शामिल करके नई पीढ़ी को उनकी जड़ों से जोड़ सकती है। यह नीति आधुनिक शिक्षा को भारतीय दृष्टिकोण से संतुलित करने का कार्य कर सकती है।

निष्कर्ष :– डॉ. राधाकृष्णन की शिक्षा नीति नैतिकता, संस्कृति और ज्ञान का एक उत्कृष्ट संयोजन है। आज जब शिक्षा का व्यवसायीकरण और प्रतियोगिता चरम पर है, उनकी नीति छात्रों को बेहतर व्यक्तित्व और समाज को बेहतर दिशा प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। डॉ. राधाकृष्णन की शिक्षा नीति में यह क्षमता है कि यह छात्रों को बेहतर मनुष्य, बेहतर नागरिक और बेहतर विचारक बना सके। यदि इसे आज के परिप्रेक्ष्य में प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो यह नीति न केवल भारतीय शिक्षा प्रणाली को सुदृढ़ करेगी, बल्कि एक ऐसे समाज की नींव भी रखेगी जो ज्ञान, नैतिकता और मानवता से प्रेरित होगा। उनकी नीतियों को अपनाकर हम एक ऐसा समाज बना सकते हैं, जो तकनीकी और वैज्ञानिक दृष्टि से उन्नत होने के साथ–साथ नैतिकता, मानवता और सहिष्णुता की नींव पर खड़ा हो। डॉ. राधाकृष्णन की शिक्षा नीति की यह

प्रासंगिकता हमें शिक्षा को केवल सफलता का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का साधन बनाने के लिए प्रेरित करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. डॉ. के. सी. पांडे (1995) ''राधाकृष्णन की शिक्षा दृष्टि'' प्रकाशन शिक्षा विभाग, नई दिल्ली पृष्ठ संख्या– 45–65.
2. डॉ. एस. एन. शर्मा (1995) ''भारतीय शिक्षा दर्शन में डॉ. राधाकृष्णन का योगदान'' प्रकाशक– साहित्य भवन, आगरा संस्करण, द्वितीय पृष्ठ संख्या– 102–120.
3. डॉ. रामचंद्र मिश्रा (2010) ''राधाकृष्णन कमीशन और आधुनिक शिक्षा का परिप्रेक्ष्य'' पत्रिका– भारतीय शिक्षा अनुसंधान पत्रिका प्रकाशन– जुलाई 2010 पृष्ठ संख्या– 22–37.
4. डॉ. वी. के. वर्मा (2005). ''डॉ. राधाकृष्णन और नैतिक शिक्षा''प्रकाशन नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली.संस्करण 2005. पृष्ठ संख्या– 88–112.
5. डॉ. शशि रंजन (2015). ''राधाकृष्णन की शिक्षा नीति की प्रासंगिकता''पत्रिका–शिक्षा और समाज, प्रकाशन– जनवरी 2015, पृष्ठ संख्या 50–68.
6. J. T. F. Jordens (1988): Dr. S. Radhakrishnan: His Philosophy and Educational Thought, Oxford University Press,Page: 143-165.

❖